Year-8; Sept. 2017
ISSN–2231-1130
UGC Sr. No. – 48398
VEETHIKA

महात्मा गाँधी के चम्पारण सत्याग्रह के सौ साल
(वर्तमान में सत्याग्रह की प्रासंगिकता)

अबरार आलम*

वैसे तो इतिहास की हर घटना की शताब्दी आती है और सौ साल पुराना बनाकर चली जाती है, लेकिन इतिहास के कुछ पन्ने ऐसे होते हैं कि वे जब भी आपको या आप उनको छूते–खोलते हैं तो वे आपको कुछ नया बनाकर चले जाते हैं। कुछ ऐसी ही घटना थी 'महात्मा गाँधी का चम्पारण सत्याग्रह।' इसी सत्याग्रह से उन्हें वह मिला जिसकी खोज थी अर्थात् जिसके लिए इतिहास ने उन्हें गढ़ा था।

15 अप्रैल, 2017 को महात्मा गाँधी के चम्पारण सत्याग्रह के 100 वर्ष पूरे हो चुके हैं। 15 अप्रैल, 1917 को ही महात्मा गाँधी राजकुमार शुक्ला के निमंत्रण पर रेलगाड़ी से चम्पारण पहुँचे थे और अंग्रेजो के खिलाफ सत्याग्रह का ऐलान किया था। इसी जगह से करमचंद गाँधी का महात्मा गाँधी बनने का मार्ग प्रशस्त हुआ था।

यह इतिहास का अमिट सत्य है कि जब–जब साधारण आदमी मुसीबत में पड़ता है तब–तब स्थानीय तरीकों को अपनाकर उसका हल निकालने की कोशिश करता है, लेकिन जब इंसान की जायज माँगों को दरकिनार कर उसे हाशिए पर ढकेल दिया जाता है तो वह आत्मचिंतन करता है और यहीं से उसे उस ताकत का आभास होता है जिसका प्रयोग कर वह आंदोलन को संगठित करता है। महात्मा गाँधी ने भी चम्पारण में जनता को लामबंद कर शक्ति जुटाने की कोशिश की। वर्षों से अंग्रेजों के शोषण, अत्याचार एवं दमन का सामना कर रही जनता के विरोध को मजबूत कानून, अनुशासित वर्दीधारी पुलिस और लठैतों का प्रयोग कर मुखर नहीं होने दिया गया था। लेकिन यह इतिहास का कटु सत्य है कि संगठित जनमत एवं राष्ट्रवाद से ओत–प्रोत जनता के विरोध को दबाने में तानाशाहों की गोलियाँ तक नाकाफी होती है। यद्यपि गाँधी जी के बाद भी कई संघर्षों में गाँधीवादी रणनीति को आजमाने की कोशिश की गयी। सत्याग्रह का स्वरूप जरूर बदला लेकिन सत्याग्रह एक साधन के रूप में सदैव अस्तित्व में रहा।

महात्मा गाँधी के सत्याग्रह की उपादेयता इस बात में दिखाई देती है कि यह केवल गाँधीवादियों तक सीमित नहीं रहा बल्कि यह तो आमजन समूह के प्रतिरोध का माध्यम बना। गाँधीवादी सत्याग्रह रणनीति को उड़ीसा के बेलियापाल के लोगों द्वारा मिसाइल रेंज को रोकने में किया गया तो सरादार सरोवर बांध के विरोध में मेधा पाटेकर द्वारा।

गाँधीवादी सत्याग्रह केवल भारत में ही सीमित नहीं रहा बल्कि दुनियाभर में सत्याग्रह के प्रतिरोध को आजमाया गया। 1944 से 1948 तक पूर्वी यूरोप में नस्लवादी हमले को रोकने में अहिंसक नागरिक आंदोलन ने मुख्य भूमिका निभाया।

अपने देश में लोकतंत्र लाने के लिए अगन चौक पर अहिंसक प्रतिरोध करने वाले चीन के हजारों छात्र जो टैंक के सामने डटकर अपनी जान गवाँ बैठे वे सत्याग्रही ही थे। सबसे चौंकाने वाला उदाहरण पड़ोसी देश पाकिस्तान में मिलता है जहाँ पंजाब प्रांत में चार लाख किसानों ने सैनिक सरकार को 'कर' देने से इंकार कर दिया था। मार्टिन लूथर, नेल्सन मंडेला तथा आंग सान सू का तरीका गाँधीवादी सत्याग्रह से मिलता–जुलता था। विनोबा भावे, बाबा आम्टे, जयप्रकाश नारायण, सुंदरलाल बहुगुणा, वंदना शिवा, अनुपम मिश्र तथा कमला देवी चट्टोपाध्याय का तरीका भी यही था।

1917 में राजकुमार शुक्ला के आह्वान पर महात्मा गाँधी चम्पारण पहुँचे, अपने मुख्य सहयोगियों राजेन्द्र प्रसाद, नरहरि पारिख, महादेव देसाई, ब्रज नारायण एवं सरोजनी नायडु के साथ ग्रामों का दौरा कर महात्मा गाँधी इस नतीजे पर पहुँचे कि

*मध्यकालीन एवं आधुनिक इतिहास विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।

वास्तव में तिनकठिया पद्धति न केवल लोगों के जीविका को प्रभावित कर रही थी बल्कि अंग्रेजी शोषण की एक जीवन्त प्रतीक भी थी।

यहाँ महात्मा गाँधी ने जिलाधिकारी के इस आदेश को मानने से इंकार कर कि आप तुरन्त जिला छोड़ दें, अपने सभी सहयोगियों को भौचक्का कर दिया। अब तक राष्ट्रवादी आंदोलन के जो भी नेता थे वह सिविल नाफरमानी चलाते समय सरकार के आदेश की अवहेलना करने का साहस नहीं करते थे, लेकिन यहाँ तो गाँधी जी एकदम विपरीत नीति अपनाकर सरकार के आदेश को मानने से इंकार कर दिये। यह गाँधीवादी रणनीति का हिस्सा था जिसमें यह मानकर चला जाता था कि बिना जनता की सहमति के शासन करना असम्भव है एवं कुशासन का विरोध करना प्रत्येक नागरिक का नैतिक कर्त्तव्य है।

दक्षिण अफ्रीका में सफल गाँधीवादी रणनीति को भारत में सर्वप्रथम चम्पारण में ही अपनाया गया, जिनमें गाँधी जी को आसातीत सफलता मिली। जिस तरीके से गाँधी जी द्वाा यहाँ गाँवों में घूम–घूम कर किसानों के बयान दर्ज किए गए उससे तो यही लगता है कि तथ्यों को सही एकत्र करने के प्रति वह कितने संवेदनशील थे। तथ्यों का सच्चा और सम्पूर्ण आकलन कैसे एक अकाट्य हथियार बन गया डेटा कलेक्शन के आज भी इस पेशेवर दुनिया में चम्पारण इसका आदर्श पाठ बन सकता है।

आज हमारी खेती–किसानी जब लाचारी और आत्महत्या का दूसरा नाम बन गई है, हमें चम्पारण सत्याग्रह के इस दिशा का ध्यान करना चाहिए। गाँधी एवं चम्पारण दोनों ही आज के हिन्दूस्तान की दशा सुधारने और दिशा दिखाने का काम एकसाथ कर सकते हैं।

आज के वर्तमान परिवेश में जब दुनिया आतंकवाद जलवायु ह्रास, भूमण्डलीकरण, आर्थिक विषमता तथा नागरिक अधिकारों के सिमटते दायरे से गुजर रही है सत्याग्रह इन समस्याओं के समाधान में एक कारगर हथियार बन सकता है। यद्यपि हमें सत्याग्रह के बहुआयामी सिद्धान्तों, स्तरों, दीर्घकालिक प्रक्रियाओं एवं तकनीकी को समझने की जरूरत है। सत्याग्रह एक बम नहीं है जो कि आँख झपकते ही समस्या का समाधान कर दे इसके लिए तो संयम, सहनशीलता प्रतिरोध तथा सबसे बढत्रकर अपने कार्य के प्रति ईमानदार बने रहने की जरूरत होती है। जैसा कि महात्मा गाँधी ने कहा भी है कि मेरे सत्याग्रह के सिद्धान्तों में सदैव परिष्कार की आवश्यकता होगी जो समय एवं परिस्थितियों के अनुरूप स्वयं को समायोजित कर जनसंघर्षों का एक कारगर हथियार बनेगी। हमें यह भी देखना होगा कि सत्याग्रह साधन के साथ–साथ साध्य भी हैं जो हथियारों की बढ़ती बुराइयों को भी नियंत्रित करने में सहायक है।

सत्याग्रह आज की परिस्थितियों में नीहित बुराइयों, कमजोरियों व समस्याओं को दूर करने में भी सहायक है। आधुनिक औद्योगिक सभ्यता और राज्य सत्ता केन्द्रित समाज में नीहित हिंसा के लिए सत्याग्रह को पूर्णरूप से उपयोगी तो नहीं माना जा सकता लकिन इसका प्रयोग कर निहित बुराइयों को काफी हद तक कम किया जा सकता है। सत्याग्रह एक प्रयास है जिसमें सफल होने में, असर करने में समय लगता है। यह भी सत्य है कि सत्याग्रह को सही तरीके से संचालित करने के लिए प्रशिक्षण एवं संयम की जरूरत है जिसको लम्बी प्रक्रिया से ही प्राप्त किया जा सकता है। सत्याग्रह की हजारों छोटी–बड़ी लड़ाइयाँ चाहे वह सफल हो या असफल नयी समाज बनाने की तरफ एक सार्थक कदम है। आतंक के विरुद्ध, नवसाम्राज्यवाद के विरुद्ध तथा चरखे का उपयोग कर स्वलंबन को प्राप्त करने के संदर्भ में, उपभोक्तावाद के तीव्र प्रतिक्रिया के रूप में एवं गरीबी, भुखमरी, बेरोजगारी जैसी समस्याओं का समाधान कर सर्वोदय समाज की स्थापना में सत्याग्रह आज भी प्रासंगिक है। राजनीति को धर्मसंगत बनाकर और मानव की आवश्यकताओं को सीमित कर तथा पर्यावरण को संरक्षित कर गाँधीवादी सत्याग्रह विश्व कल्याण की ओर मानवता को उन्मुख करने में कारगर हथियार बन सकता है।

आवश्यकता इस बात की है कि बदली हुई परिस्थितियों में सत्याग्रह का प्रयोग किन व्यक्तियों के द्वारा किया जाता है और उनका चरित्र एवं उनकी रणनीति क्या है, इसमें सामंजस्य बिठाकर

वर्तमान राष्ट्रीय एवं वैश्विक समस्याओं का समाधान किया जा सकता है।

सन्दर्भ सूची–

1. एम0के0 गाँधी, एन ऑटोबायोग्राफी : दि स्टोरी ऑफ माई एक्सपेरिमेंट विद ट्रूथ लंदन, 1966, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, लंदन।
2. बी0आर0 नन्दा, महात्मा गाँधी, नई दिल्ली, 1958, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार।
3. रविन्द्र कुमार, एडिटर एस्से ऑन गांधियन पॉलिसिज़, लंदन, 1971, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, लंदन।
4. डेविड हारडीमन, पीजेण्ट नेशनलिस्ट ऑफ गुजरात, नई दिल्ली, 1917–1934.
5. सुमित सरकार, मॉर्डन इण्डिया, 1983, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. बिपिन चन्द्रा, फ्रीडम स्ट्रगल ऑफ इण्डिया, 1990, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय।
7. रामलखन शुक्ला, मार्डन हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, 1987, हन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय।